शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

रोहित कुमार
शोधार्थी
पेसीफिक विश्वविद्यालय
निर्देशक-
डॉ. राजेश साकोरीकर

सारांश

उत्तर प्रदेश के ललितपुर शहर के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययन कक्षा 10वीं एवं 9वीं के कला वर्ग के विद्यार्थी प्रस्तुत शोध का आधार है । इस शोध में एस. डी. कपूर व्यक्तित्व परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इस शोध में 400 विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया है। विद्यार्थियों को 200 की संख्या में शहरी तथा ग्रामीण ऐसे दो वर्गों में विभाजित किया गया। शोध में पाया गया कि शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों तथा ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर है।

प्रस्तावना

व्यक्तित्व : मानसिक शिक्षा विज्ञान के विकास ने व्यक्तित्व की पुरानी अवधारणाओं को बदल दिया है। गैरिसन, कार्ल सी. और अन्य ने लिखा है- "व्यक्तित्व संपूर्ण मनुष्य है, उसकी स्वाभाविक अभिरुचि तथा क्षमताएँ और उसके भूतकाल में अर्जित किये गए ज्ञान, इन कारकों का संगठन तथा समन्वय व्यवहार प्रतिमानों, आदर्श, मूल्यों तथा अपेक्षाओं की विषेशताओं से पूर्ण होता है।"

व्यक्तित्व का कोई स्थायी प्रत्यय नहीं है। समय-समय पर व्यक्तित्व का स्वरूप बदलता रहता है। वास्तव में व्यक्तित्व उस ढंग को कहते है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अनूकूलन करता है। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि यदि किसी व्यक्ति का अपने परिवेश के साथ अनुकूलन है तो उसका व्यक्तित्व उत्तम है। व्यक्तित्व सदैव ही व्यवहार द्वारा ज्ञात होता है। व्यवहार व्यक्तित्व का बाहरी रुप है। व्यवहार में जितना अधिक संकलन होगा उतना ही सुदृढ व्यक्तित्व माना जाएगा।

जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे पर्सोना शब्द का परिवर्तित होता चला गया। चौदहवीं शताब्दी में मनुष्य की मुख्य विषेशताओं का उल्लेख करने के लिए एक नए शब्द की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा । इन आवश्यकताओं का पूर्ण करने के लिए पर्सोना को पर्सनेल्टी शब्द में तब्दील कर दिया गया।

प्राचीन मतानुसार व्यक्तित्व शब्द का अंग्रेजी शब्द Personality का हिंदी रूपांतरण है । Personality शब्द लैटिन भाषा के Persona से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ नकली चेहरा है।

आधुनिक मत : व्यक्ति और व्यक्तित्व दोनों ही अलग-अलग शब्द है, जिनका एक दूसरे से अकाटय संबंध होते हुए बहुत विभेद है। यदि ध्यानपूर्वक विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने गुणों से अन्य को प्रभावित करता है और अन्य लोगों से प्रभावित होता है। अतः वर्तमान समय में व्यक्तित्व को मध्यवर्ती के रुप में माना जा रहा है। कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों के

विचारों को स्पष्ट करेंगें जिन्होंने मध्यवर्ती चरों को मानकर व्यक्ति के स्वरूप को स्पष्ट किया है।

व्यक्तित्व के संबंध में विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों के द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्न हैं -

मन के अनुसार - व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गठन, व्यवहार के तरीकों, रुचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं और तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है।

वारेन के अनुसार - व्यक्तित्व व्यक्ति का संपूर्ण मानसिक संगठन, है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।

रैक्स के अनुसार- व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का संगठन है।

मार्टन प्रिंस के शब्दों में 'व्यक्तित्व समस्त शारीरिक तथा अर्जित वृत्तियों का योग है।'

आल्पोर्ट द्वारा दी गई व्यक्तित्व की परिभाषा काफी समग्र तथा संतोषजनक है। आलपोर्ट के की परिभाषा के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति की उन मनोभौतिक पद्धतियों का गतिषील संगठन है जो पर्यावरण के प्रति अपूर्व समायोजन स्थापित करता है।"

आज भी अधिकांश मनोवैज्ञानिक इस परिभाषा को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मानते हैं। अतः हम आल्पोर्ट की परिभाषा के विश्लेषण द्वारा व्यक्तित्व का सही स्वरूप निम्नानुसार स्पष्ट कर सकते हैं-

मनोदैहिक शीलगुण -

आल्पोर्ट की परिभाषा में एक आवश्यक बात यह कही गई है कि व्यक्तित्व का संबंध शारीरिक तथा मानसिक प्रणालियों से है। सतही परिभाषा में केवल शारीरिक शीलगुणों पर बल दिया गया और तात्विक परिभाषा में केवल मानसिक शीलगुणों पर। परंतु अल्पोर्ट ने इन दोनों शीलगुणों पर बल दिया और कहा कि व्यक्तित्व का संबंध मनोदैहिक शीलगुणों से है। इस प्रकार उन्होंने व्यक्तित्व का समग्र तथा समन्वित रूप प्रस्तुत किया, जिसे अन्य मनोवैज्ञानिकों ने सहर्ष स्वीकार किया।

संगठन -

इस परिभाषा में संगठन शब्द बहुत सार्थक एवं मूल्यवान है। आल्पोर्ट ने कहा कि व्यक्तित्व व्यक्ति के शीलगुणों का योगफल नहीं, बल्कि एक विशेष संगठन है। यदि व्यक्तित्व वास्तव में शीलगुणों का योगफल होता तो सभी व्यक्तियों के व्यवहार एवं अभियोजन समान होते; क्योंकि सभी व्यक्ति शीलगुण या विशेषक गुण के दृष्टिकोण से समान होते हैं। इसलिए आल्पोर्ट ने कहा कि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के शीलगुणों में समानता होते हुए भी उनके विशिष्ट संगठन के कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार या अभियोजन भिन्न हो जाता है। आल्पोर्ट का यह विचार सर्वमान्य है।

गत्यात्मकता -

आल्पोर्ट के अनुसार मनोदैहिक शीलगुणों का यह संगठन स्थिर नहीं है, बल्कि गत्यात्मक है। परिवर्तनशील वातावरण में व्यक्तित्व-संगठन में भी परिवर्तन हो सकता है। एक व्यक्ति एक परिस्थिति में ईमानदार और दूसरी परिस्थिति में बेईमान प्रमाणित हो सकता है। एक व्यक्ति एक परिस्थिति में निर्दय और दूसरी परिस्थिति में दयालु सिद्ध हो सकता है। अतः व्यक्तित्व संगठन में गत्यात्मकता का गुण पाया जाता है। परंतु, इसके साथ-साथ व्यक्तित्व संगठन में संगति या स्थिरता भी पाई जाती है। यह सत्य है कि एक व्यक्ति एक परिस्थिति में ईमानदार और दूसरी परिस्थिति में बेईमान बन जाता है। परंतु यह भी असत्य नहीं है कि ईमानदार व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में ईमानदार ही रहता है केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में बेईमान बन सकता है, इसी प्रकार बेईमान व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में बेईमान रहता है। केवल यदा-कदा ईमानदार बन सकता है। एक लज्जालु व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में लज्जालु और एक आक्रमणशील व्यक्ति अधिक परिस्थितियों में आक्रमणशील ही रहेगा। अतःप्रमाणित हुआ कि

व्यक्तित्व संगठन में एक ओर स्थिरता तथा दूसरी ओर गत्यात्कता की विशेषता पाई जाती है। इस प्रकार, आल्पोर्ट ने व्यक्तित्व निर्माण में परिवर्तनशील वातावरण के महत्व को स्वीकार किया और व्यक्तित्व के अभियोजन पक्ष पर बल दिया है।

अपूर्व अभियोजन -

आल्पोर्ट के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार या अभियोजन अपूर्व होता है। एक ही वातावरण में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के अभियोजन में भिन्नता होती है। दो व्यक्तियों के अभियोजन में कोई समानता नहीं दीख पड़ती है। इसे व्यक्तित्व की अपूर्वता कहते हैं। अल्पोर्ट ने अपने इस विचार के पक्ष में तर्क दिया कि एक ही ताप में अण्डा जम जाता है और घी पिघल जाता है। समान वातावरण में दोनों के अभियोजन के इस अंतर का कारण उनकी विशिष्ट आंतरिक संरचना है। ठीक इसी तरह मनोदैहिक शीलगुणों के विशिष्ट संगठन के कारण समान वातावरण में भी प्रत्येक व्यक्ति का अभियोजन अपूर्व तथा बेमिसाल बन जाता है।

आल्पोर्ट की इस परिभाषा से व्यक्तित्व का वास्तविक स्वरूप बहुत अंशों में स्पष्ट हो जाता है। लेकिन अपूर्वता के प्रत्यय को लेकर कुछ मनोवैज्ञानिकों ने उनकी आलोचना की और कहा कि व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्णतः अपूर्व नहीं होता है। कलकहीन आदि ने दावा किया है कि ‘‘प्रत्येक व्यक्ति कुछ अंशों में सभी अन्य व्यक्तियों के समान होता है, कुछ अंशों में कुछ लोगों के समान होता है और कुछ अंशों में सबों से भिन्न होता है। आल्पोर्ट ने स्वयं अपनी भूल महसूस की और 1961 में अपनी मौलिक परिभाषा (1937) में थोड़ा परिमार्जन कर ‘अपूर्व अभियोजन’ के स्थान पर ‘विशिष्ट व्यवहार एवं विचार’ शब्द को अपनी परिभाषा में शामिल किया और कहा कि, ‘‘व्यक्तित्व व्यक्ति के अंतर्गत उन मनोदैहिक शीलगुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो उसके विशिष्ट व्यवहार एवं विचार को निर्धारित करते हैं।’’ आल्पोर्ट की यह परिमार्जित परिभाषा अन्य परिभाषाओं की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, समग्र तथा संतोषजनक है। अन्य मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से व्यक्तित्व की इस परिभाषा का समर्थन किया है। सैनफोर्ड ने कहा है, ‘‘मानव की टिकाऊ विशेषताओं का अपूर्व संगठन ही व्यक्तित्व है। हिल्गार्ड, ऐटिकिसन, एवं ऐटकिसन ने व्यक्तित्व के अभियोजन-पक्ष पर बल देकर आल्पोर्ट की परिभाषा का महत्व बढ़ा दिया है।

“आर.बी. कैटल ने 1956 में व्यक्तित्व के 16 कारकों के मापन के लिए परीक्षण का निर्माण किया इनमें प्रत्येक कारक द्विध्रुवीय विमा के रूप में है। इस परीक्षण के द्वारा व्यक्तित्व का कम समय में विस्तार से मापन किया जाता है। वर्तमान शोध में इस परीक्षण द्वारा जिन 16 कारकों का मापन किया गया है, वे निम्नलिखित हैं -

1. उत्साही एकाकी - (Outgoing-Reserved) (ए)
2. अधिक बुद्विमान - (More Intelligent-Less Intelligent) (बी)
3. स्थिर-संवेगात्मक - (Stable-Emotional) (सी)
4. दृढ-नम्र - (Assertive-Humble) (ई)
5. हँसमुख-सौम्य - (Happy-go-lucky-Sober) (एफ)
6. आध्यात्मिक सांसारिक - (Conscientious-Expendient) (जी)
7. समाजी संकोची - (Venturesome-Shy) (एच)
8. संवेदनशील -निष्ठुर – (Tenderminded-Tough-Minded) (आई)
9. शंकालु -विश्वस्त - (Suspicious-Trusting) (एल)
10. कल्पनाकुशल-यथार्थवादी – (Imaginatives-Practical) (एम)
11. व्यवहारकुशल - सामान्य - (Shrewd-Forthright) (एन)
12. चिंतित - आत्मविश्वासी- (Apprehensive-Placid) (ओ)

13. आधुनिक - रूढ़िवादी - (Experimentive- Conservative) (क्यू 1)

14. स्वआधारित -समूह नियंत्रित - (Self-sufficient- Group tied) (क्यू 2)

15. नियन्त्रित - अन्तद्र्वन्दी -(Controlled-Casual) (क्यू 3)

16. तनावयुक्त -तनावमुक्त -(Tense-Relexed) (क्यू 4)

2- स्टैगर तथा कारवोस्की ने व्यक्तित्व को उद्दीपन तथा अनुक्रिया के बीच मध्यवर्ती अवस्था माना है। उन्होंने लिखा है- "व्यक्तित्व अभिप्रेरणाओं तथा प्रत्यक्षों का ऐसा विलक्षण प्रतिरूप है, जिसमें एक विशिष्ट व्यक्ति का पता चलता है।" आपने विस्तृत रूप से व्यक्तित्व की परिभाषा करते हुए लिखा है- "वास्तविक व्यक्तित्व किसी विशेष व्यक्ति की बाह्य अनुक्रिया का प्रतिमान मात्र नहीं होता और न एक व्यक्ति के सामाजिक प्रभाव होते हैं। वस्तुतः व्यक्तित्व प्रेरकों, संवेगों, प्रत्यक्षों तथा स्मृतियों का ऐसा आंतरिक संगठन होता है, जो व्यवहार की दिशा को निर्धारित करता है।

3- मनोवैज्ञानिक एडवर्डस ने व्यक्तित्व माँगों के आधार पर व्यक्तित्व मापन का एक उपकरण भी तैयार किया है जिसे एडवर्डस पर्सनल प्रीफरेन्स शैड्यूल कहते है। इसमें 15 व्यक्तित्व माँगों को सम्मिलित किया गया है। ये 15 माँगें निम्नलिखित हैं-

1. संप्रति की माँग
2. स्वीकृति की माँग
3. व्यवस्था की माँग
4. प्रदर्शन की माँग
5. स्वायत्तता की माँग
6. सानिध्य की माँग
7. परिहार की माँग
8. पराश्रय की माँग
9. प्रभुत्व की माँग
10. आत्महीनता की माँग
11. परोकार की माँग
12. प्रतिक्रिया की माँग
13. सहनशीलता की माँग
14. वैभिन्नता की माँग
15. आक्रामता की माँग

माँगों के आधार पर व्यक्तिव की व्याख्या भी सभी मनोवैज्ञानिकों को मान्य नहीं है। यह बात तो सही है कि मनुष्य की जन्मजात माँगें उसे उनकी पूर्ति के लिए प्रेरित करती है, परंतु ये तो सब मनुष्यों में समान होती है उनके आधार पर उनके आधार पर उनके व्यक्तित्व में भेद कैसे किया जा सकता है और पर्यावरणीय माँगों का विस्तार इतना अधिक होता है कि उनकी पूर्ति के लिए किए गएँ प्रयत्न एवं तरीकों के आधार पर व्यक्तित्व की पहचान करना एकदम असंभव होता है। फिर मनोवैज्ञानिकों ने माँगों की जो सूचियां तैयार की हैं वे भी अपने में स्पष्ट नहीं है सभी माँगें एक-दूसरे से गुंथी-बंधी है। अतः यह सिद्धांत भी भ्रामक है।

शोध का उद्देश्य -

शोध का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व के आधार पर तुलना करना है।

परिकल्पना -

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की परिसीमा -

1.शोध में केवल उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

2. शोध में केवल उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

3. शोध में केवल उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

4. शोध में केवल उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत केवल कला वर्ग विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

शोध अध्ययन में उपकरण(TOOLS & TECHNIQUES OF RESEARCH)-

शोध में एस. डी. कपूर व्यक्तित्व परीक्षण मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

शोध विधि -

शोध में प्रयुक्त आकडों का एस. डी. कपूर की प्रश्नावली की सहायता से प्राप्त किए।

विश्लेषण-

प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी- टेस्ट की सहायता से किया ।

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी- मान
200	100.25	15.90	1.12	200	67.12	9.27	0.66	25.45

निष्कर्ष-

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. आलपोर्ट, जी. डब्ल्यू. ए साइकोलोजीकल इन्टरप्रिटेशन, हेनरी, होल्ट, न्यूयार्क.

2. अस्थाना, विपिन (1977). मनोविज्ञान शोध विधियाँ. आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर.

3. महेश, भार्गव.(1990). आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन. आगरा : हर प्रसाद भार्गव 4/230, कचहरी घाट.